राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना (फेज–2)

JICA द्वारा ऋण एवं राज्य सरकार की वित्तीय सहायता से संचालित

संवाद पत्र

अंक - 2 अप्रेल से जून 2016

नाहरगढ़ प्राणी उद्यान का लोकार्पण

नाहरगढ़ प्राणी उद्यान का लोकार्पण माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर शनिवार 4 जून, 2016 को किया गया। करीब 80 हैक्टेयर क्षेत्र में फैले इस पार्क की कुल लागत लगभग 19 करोड़ रूपये है। यहां पर निर्मित 21 एनक्लोजरों में जयपुर चिड़ियाघर के सभी जानवरों को स्थानांतरित करने की योजना है।

लोकार्पण के अवसर पर संबोधित करते हुए माननीया मुख्यमंत्री ने पर्यावरण संरक्षण और वन्य जीवों के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए शहर के विभिन्न पार्कों व स्कूलों में शॉर्ट फिल्म/डॉक्यूमेन्ट्री दिखाने का सुझाव दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि नाहरगढ़ जूलोजिकल पार्क में निकट भविष्य में लॉयन और टाइगर सफारी की सुविधा शुरू होगी जिसकी संभावनाएं तलाशी जा रही है। उन्होंने कहा कि नाहरगढ़ जूलोजिकल पार्क के रूप में यहां एक और अध्याय जुड़ गया है जो जयपुर आने वाले पर्यटकों को एक नई अनुभूति देगा। उन्होंने कहा कि वन्य जीवों की लुप्त हो रही दुर्लभ प्रजातियों के लिए संरक्षित प्रजनन के लिए प्राकृतिक आवासों को फिर से पुनःस्थापित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के चिड़ियाघरों में इंटरशिप कार्यक्रम शुरू किए जाए, जिससे लुप्त होती प्रजातियों को बचाने के लिए शोध करने की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे नाहरगढ़ प्राणी उद्यान का लोकार्पण करते हुए

परियोजना निदेशक की कलम से ...

चालू वित्तीय वर्ष की प्रथम तिमाही की महत्वपूर्ण गतिविधियों के संकलन के साथ त्रैमासिक पत्र का दूसरा अंक प्रस्तुत है। साथ ही अत्यन्त हर्ष की अनुभूति के साथ वित्तीय वर्ष 2015–16 की उपलब्धियों को आपके साथ साझा करना चाहूंगा। गत वर्ष परियोजना के सभी घटकों में आशातीत भौतिक प्रगति एवं वित्तीय उपलब्धि दर्ज की गई। इस उपलब्धि के लिए आप सभी को साधुवाद।

चालू वित्तीय वर्ष की शुरूआत में ही सभी मंडल प्रबंधन इकाईयों को इस वर्ष के लक्ष्यों का निर्धारण कर बजट का आवंटन कर दिया गया है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी हम निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में कोई कसर नहीं छोडेंगे।

— **आर. के. गोयल** आई.एफ.एस

परियोजना निदेशक

उन्होंने कहा कि पार्क में वन्य जीवों की संख्या बढ़ाई जाएगी ताकि यहां पर्यटक अधिक समय पर रूक सके। उन्होंने उद्यान में मौजूद वन्य जीवों के फैन क्लब बनाने का भी सुझाव दिया।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री का संबोधन दिव्यांग समझ सके इसके लिए साइन लैंग्वेज में अनुवाद की भी व्यवस्था की गई थी।

पार्क को लेकर जनता में उत्साहः नाहरगढ़ जूलॉजिकल पार्क को लेकर जयपुर की जनता में काफी उत्साह नजर आया। उद्घाटन के अगले दिन ही करीब 30 हजार वन्य जीव प्रेमी पार्क में पहुंचे। अधिकारियों को उम्मीद करीब 5000 लोगों केआने की थी, परन्तु पार्क के प्राकृतिक माहौल में शेर–बाघ–बघेरों को देखने के लिए कड़ी धूप के बाजूद भारी तादाद में दर्शक पार्क पहुंचे। यह पार्क आमजन के लिए सुबह 8.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक खुलेगा। मंगलवार के दिन पार्क बंद रहेगा।

पार्क की विशेषताएंः नाहरगढ़ प्राणी उद्यान लगभग 80 हैक्टेयर में विकसित किया गया है जो 780 हैक्टयेर में फैले नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क का हिस्सा है। यहां मांसाहारी, शाकाहारी एवं सर्वाहारी जानवरों के लिए अलग–अलग बनाए गए 21 एन्क्लोजरों में से 14 का निर्माण परियोजना के अंतर्गत हुआ है। पर्यटक एक आकर्षक द्वार से

लोकार्पण के अवसर पर माननीया मुख्यमंत्री द्वारा पौधारोपण

माननीया मुख्यमंत्री द्वारा ब्रॉशर का विमोचन

उद्यान के अंदर निर्मित मचान

पीने के पानी की सुविधा

गुजरकर इस पार्क में प्रवेश पाते हैं। जयपुर प्राणी उद्यान के जानवरों के अलावा जूनागढ़ एवं बनरगट्टा से शेर, दिल्ली से सफेद बाघ, लखनऊ से मगरमच्छ एवं पैंथर तथा बिलासपुर से स्लोथ बीयर भी इस पार्क के लिए मंगवाए गए हैं। पर्यटकों की सुविधा एवं मनोरंजन के लिए पार्क में मचान, गजेबो, चिल्ड्रन्स पार्क, इनफोरमेशन कियोस्क आदि लगाए गए हैं। बच्चों के लिए ओपन इंटरप्रेटेशन एरिया भी बनाया गया है जहां पर बच्चे वन्यजीवों से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। दिव्यांगों के लिए शौचालय एवं महिला शौचालय में किड्स कार्नर की सुविधा भी प्रदान की गई है।

लॉयन एनक्लोजर

पानी के किफायती एवं पूर्ण उपयोग के लिए पार्क में ड्रिप इरिगेशन सिस्टम एवं वाटर रीसाइक्लिंग की व्यवस्था है। परियोजना अंतर्गत विभिन्न जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण भी किया गया है। ऊर्जा प्रबंधन के लिए सौर ऊर्जा का प्रयोग प्रस्तावित है। पर्यटकों की सुविधा के लिए पार्क में कैफेटेरिया एवं पीने के पानी की व्यवस्था है। एक सोविनियर शॉप भी खोली गई है जिसका संचालन एक स्वयं सहायता समूह द्वारा किया जा रहा है।

विकास कार्यों की समीक्षा

संयुक्त परियोजना निदेशक श्री अक्षय सिंह द्वारा अप्रेल के अंतिम सप्ताह में चूरू, सीकर एवं झुंझुनूं मण्डल प्रबंधन इकाईयों का दौरा कर उनके अंतर्गत किये जा रहे कार्यों की समीक्षा की गई। अपने दौरे के दौरान श्री सिंह ने पौधारोपण, नर्सरी, जल एवं मृदा संरक्षण कार्यों का अवलोकन किया तथा आवश्यक निर्देश दिये। साथ ही स्वयं सहायता समूहों के गठन एवं उनके द्वारा प्रस्तावित आय सृजन गतिविधियों के बारे में स्वयंसेवी संस्था के प्रतिनिधियों से चर्चा की तथा उन्हें भी दिशा निर्देश प्रदान किये।

संयुक्त परियोजना निदेशक श्री अक्षय सिंह, सीकर डीसीएफ श्री राजेन्द्र हुड्डा के साथ नर्सरी का अवलोकन करते हुए

परामर्शी कार्यशाला का आयोजन

अध्ययन दल के श्री ई.पी. सिंह, श्री एल.एम. तिवारी (टीम लीडर, बेसिक्स) व अन्य सदस्य प्रारम्भिक परिणामों पर चर्चा करते हुए

राज्य में वर्तमान में संचालित राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना–2 एवं पूर्व में क्रियान्वित राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना के प्रभावों, परियोजना क्रियान्वयन प्रणाली एवं परियोजना संबंधित विभिन्न आयामों के अध्ययन के लिए जापान इंटरनेशनल कॉ–ऑपरेशन ऐजेंसी (JICA) ने हाल ही में All State Financial Services एवं BASIX Consulting को नियुक्त किया। अप्रेल एवं मई 2016 में ऐजेंसी के सदस्यों ने राज्य के विभिन्न जिलों का भ्रमण कर परियोजना क्रियान्वयन का अध्ययन किया तथा आंकड़े संग्रहित किए।

इस अध्ययन का उद्देय JICA द्वारा भविष्य में स्वीकृत किए जानी वाली परियोजनाओं के लिए आधार तैयार करना है। JICA सन् 1991 से देश में वानिकी परियोजनाओं के लिए ऋण उपलब्ध करा रहा है। बदलते परिवेश एवं बदलती जरूरतों के हिसाब से JICA की रणनीति में भी बदलाव हुआ है। इसी आधार पर शुरूआती परियोजनाएं फर्स्ट जनरेशन, वर्तमान में संचालित परियोजनाएं सैकण्ड जनरेशन व भविष्य में आने वाली प्रस्तावित परियोजनाएं थर्ड जनरेशन कहलाई जाएंगी।

राज्य में अध्ययन के लिए ऐजेंसी द्वारा 30 गांवों को सैम्पल के तौर पर चयनित किया गया। अध्ययन के प्रारम्भिक परिणामों पर चर्चा के लिए 16 मई को एक कन्सलटेटिव वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इसमें श्री आर. के. गोयल (परियोजना निदेशक), श्री अक्षय सिंह (संयुक्त परियोजना निदेशक), श्री आर.के. खैरवा (उप परियोजना निदेशक), श्री संजय प्रकाश भादू (उप परियोजना निदेशक), श्री ए.एस. गोठवाल (डीएफओ, बांसवाड़ा), श्री सुरेश आबूसरिया (डीसीएफ, छत्तरगढ़), श्री मुकेश सैनी (डीसीएफ चित्तौड़गढ़), श्री एम.के. अग्रवाल (डीसीएफ, जयपुर दक्षिण), श्री योगन्द्र कालवी (डीसीएफ जयपुर उत्तर), श्री बालाजी करी (डीसीएफ, पाली), सुश्री आकांक्षा चौधरी (डीसीएफ, जयपुर वन्यजीव), परियोजना निदेशालय के अन्य अधिकारी, JICA प्रतिनिधि एवं स्वयंसेवी संस्था के सदस्य शामिल हुए। अध्ययन की अंतिम रिपोर्ट शीघ्र ही तैयार कर पेश की जायेगी।

वर्कशॉप के दौरान (दाएं से) JICA India के श्री विनीत सरीन, परियोजना निदेशक श्री आर.के. गोयल, JICA के श्री अनुराग सिन्हा एवं अन्य

ग्राम्य वन सुरक्षा प्रबंध समिति/स्वयं सहायता समूह सदस्यों/सब्जी उत्पादन समूह के सदस्यों के साथ बैठक

आय सृजन गतिविधियों का सुदृढ़ीकरण

वर्ष 2016–17 अन्तर्गत परियोजना के घटक "गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका संवर्धन" में वांछित प्रगति एवं गठित स्वयं सहायता समूहों में गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु परियोजना प्रबंधन इकाई स्तर से अथक प्रयास किये जा रहे है।

इसी उद्देश्य से **श्री नरेश शर्मा, वरिष्ठ परियोजना प्रबन्धक (व्यापार नियोजन एवं विपणन)** तथा **श्री मनोज पट्टनायक, परियोजना सलाहकार (सामुदायिक संगठन एवं विकास)** द्वारा मण्डल प्रबन्धन इकाई भीलवाड़ा, बांसवाड़ा एवं डूंगरपुर का क्षेत्र भ्रमण कर प्रगति अवलोकन एवं क्षेत्रीय कर्मियों को आवश्यक मार्गदर्शन दिया गया।

क्षेत्र भ्रमण के दौरान समस्त मण्डल प्रबन्धन इकाईयों में स्वयं सहायता समहों के गठन, गठित समूहों द्वारा "पंचतंत्र" के पालन, क्षमता संवर्धन एवं समूहों द्वारा संचालित गतिविधियों के सफल संचालन के पहलुओं को देखा गया तथा आवश्यक सुधारों हेतु अवगत करवाया गया।

बांसवाड़ा मण्डल प्रबंधन इकाई आधीन क्षेत्रीय प्रबंधन इकाई कुशलगढ़ में **रैंज ऑफिसर श्री सूर्या सिंह** तथा घाटोल में **फोरेस्टर शंकर सिंह** के साथ उन्नत सब्जी उत्पादन गतिविधि से जुड़े हुये 22 स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ बैठक कर उन्हें फैडरेशन गठित करने एवं भविष्य में फारमर्स प्रोड्यूसर ऑरगेनाईजेशन (FPO) बनाने हेतु प्रेरित किया गया तथा संबंधित समूहों की सहमति उपरान्त इस संबंध में की जाने वाली कार्यवाही से अवगत करवाया गया।

डूंगरपुर मण्डल प्रबन्धन इकाई में **डीएफओ डॉ. सरथ बाबू, एसीएफ श्री धनपत सिंह,** विभिन्न रेंज ऑफिसरों तथा स्वयंसेवी संस्था प्रतिनिधियों के साथ आय सृजन गतिविधियों के सुदृढ़िकरण पर विस्तार से चर्चा की गई। वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समिति झलाई, चौकी एवं आडिवाट में स्वयं सहायता समूहों एवं समिति के सदस्यों के साथ बैठक कर पशुपालन गतिविधियों में जुड़े हुए मांडली फैडरेशन के समूहों को पशु आहार उत्पादन एवं दुग्ध संग्रहण गतिविधि संचालन हेतु सुझाव दिये गये। ग्राम वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समिति आडिवाट अन्तर्गत बांस आधारित उत्पादों के सृजन हेतु तकनीकी प्रशिक्षण की कार्य योजना पर विस्तृत चर्चा की गई।

आदिवत, डूंगरपुर में बांस शिल्प कार्य

भ्रमण के दौरान मण्डल प्रबंधन इकाईयों के अधिकारियों, फील्ड स्टाफ, स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों तथा समिति पदाधिकारियों से बैठक कर प्रवेश बिन्दु गतिविधि, लेखा संधारण एवं पारदर्शिता पट्ट आदि अन्य परियोजना के घटकों पर विस्तार से चर्चा की गई।

स्वयं सहायता समूह सदस्यों द्वारा पौधों का विपणन

सफलता की कहानियाँ

कृषि वानिकी से बढ़ी आय और मिला रोजगार

मण्डल प्रबन्धन इकाई, नागौर के वन रेंज कुचामन के ग्राम रामपुरा में ग्राम्य वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति, विभाग एवं कार्यरत गैर सरकारी संस्था कृषक सेवा संस्थान के सहयोग से 15 सितम्बर 2014 को वीर तेजा स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। इस समूह में कुल 10 पुरूष सदस्य शामिल हुये। पूर्व में यह लोग खेती और पशुपालन कार्य से जुड़े हुऐ थे और कम पानी एवं सीमित संसाधनों का उपयोग कर थोड़ी – थोड़ी खेती करते थे एवं साथ–साथ गाय एवं बकरी पालन भी करते थे। परन्तु पानी की कमी होने के कारण रोजगार पर विपरित असर पैदा होने लगा एवं सभी लोग लगभग बेरोजगार से हो गये। गरीब स्थानीय युवाओ को राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना–2 के तहत जनजागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से स्व–रोजगार के बारे में ज्ञात हुआ, तब इन सब युवाओ ने मिलकर स्वयं सहायता समूह का गठन किया। विभाग एवं गैर सरकारी संस्था के सहयोग से नर्सरी तैयार कर आय बढाने हेतु कार्ययोजना तैयार की एवं गतिविधियों की व्यावहारिकता की जांच कर कार्य प्रारम्भ किया।

वीर तेजा स्वयं सहायता समूह द्वारा स्थापित नर्सरी

परियोजना अन्तर्गत इस समूह ने वितीय वर्ष 2014 में ही वन सुरक्षा एवं प्रबन्धन समिति रापुरा से 50000/– का रिवोल्विंग फंड प्राप्त कर शुरूआत में अरडू, नीम, शीशम, खेजडी, गुलमोर के पौधे तैयार किये एवं प्रथम वर्ष 2014 जुलाई–अगस्त में ही 28000/– का लाभ प्राप्त कर लिया। इसी प्रकार से समूह ने वर्ष 2015 में भी पौध तैयार कर वितरण एवं विक्रय कर 32000/– रूपये का लाभ अर्जित किया है। समूह नियमित प्रतिमाह बचत कर दिनांक 31 जून 2016 तक 33000/– की कुल बचत कर चुका है। वर्तमान में यह समूह स्थानीय मांग के अनुसार अरडू, नीम, शीशम, गुलमोहर एवं अन्य विभिन्न प्रकार के पौध की तैयारी के साथ–साथ घरों में रखे जाने वाले गमलों के आकर्षक सजावटी फूलों वाले पौध भी तैयार करता है एवं पुष्कर की विभिन्न नर्सरियो में तैयार किये जाने वाले सजावटी एवं छायादार फल, फूलों वाले पौधो के साथ साथ बागवानी हेतु आंवला, निम्बु, अनार, केरून्दा आदि के छोटे पौधे खरीद कर उन्हे बडा होने पर कुचामन नावा एवं आसपास के स्थानीय क्षेत्र में बेच कर अच्छी आय प्राप्त कर रहा है।

हर्ष क्षेत्र भ्रमण के दौरान समिति सदस्यों के साथ बैठक

सफलता की कहानियाँ

भक्तों की सेवा से आजीविका अर्जन

मण्डल प्रबंधन इकाई सीकर की ग्राम्य वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति हर्ष में हर्ष पर्वत पर भगवान शिव व हर्षनाथ भैरव जी का पुरात्वकालिन मन्दिर है। यहां पर राजस्थान व देश के विभिन्न स्थानो से प्रतिदिन हजारो की संख्या में यात्री दर्शनो के लिए आते है । परियोजना के तहत् सुक्ष्म नियोजन में इस स्थान पर गांव के लोगो को रोजगाार उपलब्ध कराने को ध्यान में रखते हुए गांव के लोगों को स्वयं सहायता समूह गठन के लिए प्रेरित किया गया। जुलाई 2015 में गांव में 20 सदस्यों का स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। इस समूह के सदस्यो ने 100 रू. प्रति सदस्य के हिसाब से बचत करना शुरू किया। समूह का बचत खाता बैंक में खुलवाया गया। सदस्यों ने नियमित बैठक करते हुए धीरे –धीरे बचत की और आंतरिक लेन देन आरम्भ किया। परियोजना अंतर्गत इस समूह को स्थानीय स्तर पर तकनीकी मदद उपलब्ध करवायी गयी। समूह सदस्यों ने अपनी बचत से इस पर्वत पर माला प्रसाद विक्रय केन्द की शुरूआत की। पहले सदस्य आस–पास के गांव में मजदूरी करते थे। इससे इनकी आय 100–150 रूपये प्रतिदिन थी। समूह के द्वारा माला प्रसाद विक्रय केन्द्र शुरू करने के उपरान्त 250–300 रूपये प्रतिदिन आय होने लगी।

इसके साथ ही ग्राम्य वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति आंतरी में गांव के लोगों को रोजगाार उपलब्ध कराने को ध्यान में रखते हुए मई 2014 में 10 सदस्यो के स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। समूह सदस्यों ने अपनी बचत व समिति के द्वारा प्राप्त ऋण से इस पर्वत पर जलपान गृह की शुरूआत की। पहले सदस्य आस–पास के गांव में मजदूरी करते थे। इससे इनकी आय 100–150 रूपये प्रतिदिन थी। समूह के द्वारा जलपान गृह शुरू करने के उपरान्त 250–300 रूपये प्रतिदिन कमाने लगे है। साथ ही यह समूह वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति आंतरी को भी राशि रूपये 6000/– प्रति माह पर्यावरण संरक्षण हेतु सहयोग के रूप में देता है। अब समूह के द्वारा यात्रियों को हर प्रकार की सुविधाए उपलब्ध करवायी जाती है।

हर्ष वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति तथा स्वयं सहायता समूहों की बैठक

परियोजना निदेशालय द्वारा गतिविधिवार मासिक कैलेण्डर जारी

सभी मण्डल प्रबंधन इकाईयों को वित्तीय वर्ष 2016–17 में कराये जाने वाले विकास कार्यों हेतु परियोजना निदेशालय द्वारा गतिविधिवार मासिक कैलेण्डर भिजवाया गया है तथा इसके अनुसार अपने कार्यों के निर्धारण के संबंध में सुनिश्चित होने के निर्देश जारी किये गये।

Monthly Activities Chart for Financial Year 2016-17 (RFBP-2)

S.No.	Package	Activity	April	May	June	July	Aug	Sept.	Oct.	Nov.	Dec.	Jan.	Feb.	March.
1	Afforestation	Advance Action	√	√								√	√	
		Planting			√	√	√							
		Watering	As per Norms											
2	Agro Forestry	Raising of seedlings by SHG	√	√									√	
		Training to SHG	√	√						√	√	√		
3	Water Conservation Structures	Anicut Type I / II	√	√	√				√	√	√	√	√	
4	Biodiversity Conservation	DLT	√	√						√	√			
		In-situ Cons.	√	√	√						√	√	√	
		Closure for Bio. Cons.	√	√	√									
5	Poverty Alleviation and Livelihood Improvement	Livelihood Imp. Act.								√	√	√		
		Formation and Mob. SHG	√	√	√									
		Technical Training to SHG Members							√	√	√			
		Support for Marketing & Value Addition								√	√	√	√	
6	Capacity Building Trainings and Research	Trainings/Camp	√	√					√	√	√	√		
7	Community Mobilization	EPA	√	√										
		Meeting Center	√	√										
		CET-Awerness Camp	√	√					√	√				
		Work shop& Seminar								√	√	√		

Financial Progress for the period April 2016 to June 2016

Rs. In Lacs.

S.No.	Package / Budget Head	Expenditure upto FY 2015-16	FY 2016-17		Cummulative Expenditure
			BE	Exp. April'16 to June'16	
1	Afforestation	35528.36	12326.31	994.42	36522.77
2	Agro Forestry Activities	4.99	42.60	0.00	4.99
3	Water Conservation Structures	2048.13	3689.55	336.52	2384.64
4	Biodiversity Conservation	9048.62	1556.04	276.04	9324.66
5	Poverty Alleviation and Livelihood Improvement	361.66	312.00	0.00	361.66
6	Capacity Building, Training & Research	167.62	258.12	0.00	167.62
7	Community Mobilisation	3819.41	815.30	40.06	3859.48
8	Project Management	1571.36	505.70	32.43	1603.79
9	Monitoring & Evaluation	148.69	78.00	0.57	149.25
10	Contractual Personnel for PMU	742.59	282.00	58.95	801.54
	Total	**53441.42**	**19865.62**	**1738.99**	**55180.40**
11	Administrative Cost	467.14	134.38	28.04	495.18
12	VAT & Import Tax	0.00	0.00	0.00	0.00
	Total	**467.14**	**134.38**	**28.04**	**495.18**
	Grand Total	**53908.56**	**20000.00**	**1767.03**	**55675.58**

संपादक मण्डलः

संरक्षक: **आर.के. गोयल**, परियोजना निदेशक

संपादक: **अक्षय सिंह**, संयुक्त परियोजना निदेशक

सहायक संपादक: **आर .के. खैरवा**, **संजय प्रकाश भादू**

संयोजन: संयोग मिश्र

साज-सज्जा: गिरधारी लाल चौधरी

प्रकाशक : राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना (फेज–2), अरावली भवन, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) 302004, फोन : 0141–5199660